SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बालकों के समाजीकरण में कामकाजी और घरेलू माताओं की भूमिका

मीनू चौधरी, शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
चरनजीत कौर, (Ph. D.), गृह विज्ञान विभाग,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

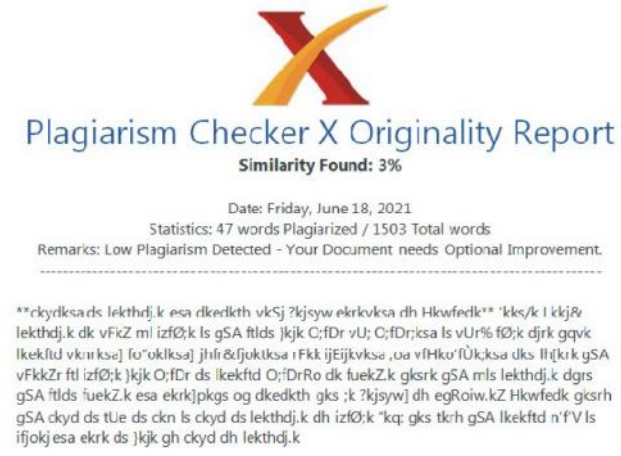

Corresponding Author
मीनू चौधरी, शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
चरनजीत कौर, (Ph. D.), गृह विज्ञान विभाग,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/06/2021
Revised on : -----
Accepted on : 25/06/2021
Plagiarism : 03% on 18/06/2021

शोध सार

समाजीकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अन्तः क्रिया करता हुआ सामाजिक आदतों, विश्वासों, रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं एवं अभिवृत्तियों को सीखता है। अर्थात् जिस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति के सामाजिक व्यक्तित्व का निर्माण होता है, उसे समाजीकरण कहते है। जिसके निर्माण में माता,चाहे वह कामकाजी हो या घरेलू की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक के जन्म के बाद से बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

सामाजिक दृष्टि से परिवार में माता के द्वारा ही बालक की समाजीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है, क्योंकि माता अपने बच्चे को प्यार करती है, परिवार के अन्य सदस्य भी उसे प्यार करते है। वे उसके साथ हंसते बोलते हैं। बच्चा उनकी ओर देखता है, उनके होठों को हिलाकर बातें करने की प्रक्रिया को बार–बार देखता और फिर उनकी नकल करने का प्रयास करता है। जिससे बालक में विकास के महत्वपूर्ण पक्ष भाषा का विकास होता है, जो बालक को समाज में समायोजित करने में मददगार होता है। माता ही बालक को परिवार एवं समाज में अनुकूलित एवं समायोजित होना सिखाती है। वह सिखाती है, कौन–कौन से काम करने चाहिए और किन–किन कार्यो से बचना चाहिए? आधुनिक परिदृश्य में एकल परिवारों की बढती संख्या व माताओं के कामकाजी स्वरूप के कारण माताओं परवरिश शैली में भी परिवर्तन आ गया है, जिससे बालकों का समाजीकरण प्रभावित होता है।

मुख्य शब्द

समाजीकरण, कामकाजी और घरेलू माता.

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है, और अपना विकास करता है। समाज के बिना उसका विकास असंभव हैं। बालक जब जन्म लेता है तो ना ही वह सामाजिक होता है और ना ही असामाजिक। जैसे–जैसे वह समाज के संपर्क में आता है, वैसे–वैसे उसमें सामाजिक गुण विकसित होने लगते है। बच्चा जब इस संसार में आता है तो वह समाज के रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं से अंजान होता है। माता ही बालक की प्रथम गुरू होती है, जो बालक को समाज में रहने के तौर–तरीके सिखाती है, और बालक की समाजीकरण प्रक्रिया में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। कामकाजी और घरेलू दोनों ही स्वरूपों में माता,बालक के विकास की प्रमुख आधारशिला होती है, जो बालक को सामाजिक मान्यता प्राप्त भूमिका (बहन–भाई, बेटा–बेटी, दोस्त आदि) निभाना सिखाती है, तथा बालक में सामाजिक अभिवृत्तियों का विकास करती है।

साहित्य का पुनरावलोकन

रीना (2004) के द्वारा किये गए शोध में पाया गया कि कामकाजी महिलाओं की तुलना में, घरेलू महिलाओं के बच्चे सामाजिक तौर पर ज्यादा असमायोजित होते है। घरेलू महिलाओं के बच्चे अतिसक्रिय होते हैं। अन्य शोधों में पाया गया कि माता के कामकाजी होने का बच्चों के समाजीकरण प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सिन्हा, आरती तथा पासवान, एस. (2005) ने ''पालन–पोषण के प्रति माता की अभिवृत्ति का बच्चों के गृह एवं सामाजिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन'' शीर्षक पर शोधकार्य का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में इन्होनें पाया कि जिन माताओं की बच्चों के पालन–पोषण के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति थी उनके बच्चों का गृह एवं सामाजिक समायोजन उत्तम था। इसके विपरीत जिन माताओं की बच्चों के पालन–पोषण के प्रति ऋणात्मक अभिवृत्ति थी उन माताओं के बच्चों का गृह एवं सामाजिक वातावरण असंतोषजनक पाया गया।

उद्देश्य

1. कामकाजी महिलाओं के बालकों के समाजीकरण का अध्ययन करना।
2. घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण का अध्ययन करना।
3. कामकाजी और घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत प्रतिदर्श हेतु 300 बालकों का चयन दैव–निदर्शन विधि (Random Sampling Method) द्वारा किया गया है, जिनमें 150 कामकाजी और 150 घरेलू महिलाओं के बालक है। प्रतिदर्श चयन प्रक्रिया में अध्ययन क्षेत्र नोएडा (उ.प्र.) के 10 विद्यालयों में से कक्षा 4,5,6 के उत्तर बाल्यावस्था (6 से 12 वर्ष) के बालकों को सम्मिलित किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 30 बालकों को लिया गया। तथ्यों का संकलन करने के लिए सर्वेक्षण विधि द्वारा स्व–निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यकीय विश्लेषण

तथ्यों का संकलन करने के बाद उनका प्रतिशत विधि से सारणी एवं ग्राफ के रूप में विश्लेषण किया गया है। सांख्यकीय सूत्र मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग भी किया गया है, तथा परिकल्पना की सार्थकता स्तर 0.05 पर जाँची गई है, जो निम्नानुसार है:

सारणी क्रमांक 1: कामकाजी महिलाओं के बालकों के समाजीकरण के स्तर को प्रदर्शित करने वाली सारणी

संख्या क्र.	समाजीकरण के स्तर	कामकाजी महिलाओं के बालक	
		संख्या	प्रतिशत
1	निम्न	25	16.67
2	मध्यम	63	42.00
3	उच्च	62	41.33
	कुल	**150**	**100.00**

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

सारणी क्रमांक 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि कामकाजी महिलाओं के 16.67 प्रतिशत बालकों मे समाजीकरण स्तर निम्न, 42 प्रतिशत बालकों में मध्यम तथा 41.33 प्रतिशत बालकों में समाजीकरण का स्तर उच्च है।

सारणी क्रमांक 2: घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण के स्तर को प्रदर्शित करने वाली सारणी

संख्या क्र.	समाजीकरण के स्तर	कामकाजी महिलाओं के बालक	
		संख्या	प्रतिशत
1	निम्न	30	20.00
2	मध्यम	80	53.33
3	उच्च	40	26.67
	कुल	**150**	**100.00**

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

सारणी क्रमांक 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि घरेलू महिलाओं के 20 प्रतिशत बालकों मे समाजीकरण स्तर निम्न, 53.33 प्रतिशत बालकों में मध्यम तथा 26.67 प्रतिशत बालकों में समाजीकरण का स्तर उच्च है।

सारणी क्रमांक 3: कामकाजी और घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण के स्तर को तुलनात्मक रूप से प्रदर्शित करने वाली सारणी

संख्या क्र.	समाजीकरण के स्तर	कामकाजी महिलाओं के बालक		घरेलू महिलाओं के बालक		कुल	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	निम्न	25	16.67	30	20.00	55	18.33
2	मध्यम	63	42.00	80	53.33	143	47.67
3	उच्च	62	41.33	40	26.67	102	34.00
	कुल	**150**	**100.00**	**150**	**100.00**	**300**	**100.00**

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

सारणी क्रमांक 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि कुल 300 बालक है जिनमें से 150 कामकाजी महिलाओं के बालकों में से 16.67 प्रतिशत बालकों का समाजीकरण स्तर निम्न, 42 प्रतिशत बालकों का समाजीकरण स्तर मध्यम, तथा 41.33 प्रतिशत बालकों का समाजीकरण स्तर उच्च है। 150 घरेलू महिलाओं में से 20 प्रतिशत बालकों का समाजीकरण स्तर निम्न, 53.33 प्रतिशत बालकों का समाजीकरण स्तर मध्यम, तथा 26.67 प्रतिशत बालकों का समाजीकरण स्तर उच्च है।

सारणी क्रमांक 4: कामकाजी और घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण को विविध सांख्यकीय मापन की विधियों जैसे–मध्यमान, मानकविचलन तथा मानकत्रुटि के द्वारा तुलनात्मक विश्लेषण करने वाली सारणीः

Independent Sample t-Test

	बालक	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
समाजीकरण	कामकाजी महिलाओ के बालक	150	21.9889	2.89245	0.23617
	घरेलू महिलाओं के बालक	150	21.6135	2.37327	0.19378

सारणी क्रमांक 5: कामकाजी और घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण को स्वतंत्र टी–परीक्षण द्वारा दर्शाने वाली सारणी–

Source of Variance	t	df	Remarks
समाजीकरण	1.229	298	p>0.05

उपर्युक्त सारणी–5 से हमें यह ज्ञात होता है, कि कामकाजी और घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण हेतु स्वतंत्र टी–परीक्षण से प्राप्त टी–मूल्य 1.229 तथा डिग्री ऑफ फ्रीडम 298 है। सार्थकता स्तर 0.05 पर हमारी शून्य परिकल्पना ''कामकाजी और घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।'' अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

बालक को समाज का प्रकार्यात्मक सदस्य बनाने व सामाजिक समायोजन कराने में माता अहम भूमिका निभाती है। माता को समाज द्वारा समाजीकरण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। समाज की अन्य संस्थाओं जैसे–परिवार, विद्यालय, समुदाय, सांस्कृतिक व राजनैतिक समूहों के साथ समायोजन कराने में माता, बालक की मदद करती है। बालक में सहयोग भावना, हम की भावना का विकास भी करती है। प्रस्तुत शोधपत्र ''कामकाजी और घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण का तुलनात्मक अध्ययन'' से संबंधित है। सर्वेक्षण व प्रश्नावली विधि द्वारा प्राप्त तथ्यों के परिणाम से हमें यह प्राप्त हुआ है, कि कामकाजी और घरेलू महिलाओं के बालकों के समाजीकरण में किसी भी प्रकार का कोई अन्तर नहीं पाया गया है। समाजीकरण बालक के जीवन में आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, और उसकी माता चाहे उसका स्वरूप घरेलू हो या कामकाजी उसके जीवन की आधारशिला है, जो बालक को सामाजिक अपेक्षायें और दूसरों से कैसे बात करें, कैसे चलें,खाने–पीने का तरीका, दैनिक क्रियाकलाप आदि सभी समाजीकरण के व्यवहार व मानदण्ड माता के द्वारा ही सिखाए जाते है। एरी एवं जैन (2010) का मानना है, कि जो बालक आगे जाकर सफल सामाजिक समायोजन व उपलब्धियाँ प्राप्त करते है, वे ऐसे परिवार से संबंध रखते है जहाँ बालक व माता सह संबंध मधुर तथा पारिवारिक वातावरण सकारात्मक होता है। माता के कामकाजी और घरेलू स्वरूप का बालक के उत्तम समाजीकरण से कोई संबंध है, इसलिए माता को अपने बालक के साथ अपना मात्रात्मक नही बल्कि गुणात्मक समय व्यतीत करना चाहिए, जिससे बालक समाजीकरण अच्छी प्रकार से हो सकें।

सुझाव

1. माता (कामकाजी/घरेलू) द्वारा, बालकों को सकारात्मक पारिवारिक वातावरण दिया जाना चाहिए तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बालक का समायोजन करने में उसकी सहायता करनी चाहिए।
2. बालकों में सहयोग, शेयरिंग तथा हम की भावना का विकास करना चाहिए। बालकों को उसके पीयर ग्रुप के साथ समायोजन कराकर बालक की समाजीकरण प्रक्रिया में सहायता करनी चाहिए।
3. माता द्वारा बालकों को समाजीकरण के पर्याप्त अवसर दिए जाना चाहिए। विभिन्न आयु समूहों के बालकों, व्यस्कों, विभिन्न पृष्ठभूमि के व्यस्कों के साथ रहने का अवसर जिससे वह सामाजिक रूप से दूसरे अन्य लोगों के साथ रहना सीख सकेगा।

4. समाजीकरण उत्तम बनाने हेतु माता द्वारा बालकों में अन्य व्यक्तियों के साथ विभिन्न सामाजिक विषय पर बातचीत की योग्यता विकसित की जानी चाहिए तथा स्वकेंद्रित बातचीत का विरोध किया जाना चाहिए।
5. बालकों को सामाजिक क्रियायों व गतिविधियों के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
6. बालकों को समाजीकरण उचित दिशा में हो सकें इस हेतु माता द्वारा उचित मार्गदर्शन तथा रोल मॉडल उपलब्ध करायें जाने चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. Gerald Handle Spencer E.Cahill Fredrick Elkin,Children and Society, The Socilogy of children and Childhood Socialization,(Book) Pg. No. 118
2. *''द वर्किंग वीमेन''* द पोजीशन ऑफ वीमन इन इण्डिया बम्बई 1973
3. *''वुमन टू वर्क रोल्स एण्ड द क्वालिटी ऑफ देयर लाइफ''* शोधपत्र 2004
4. वर्मा, किरण *''विद्यार्थियों में समाजीकरण की समस्यायें व समाधान''* शोधपत्र 2017
5. शर्मा कल्पना, *''नौकरीपेशा और घरेलू महिलाओं के बालकों की शैक्षणिक उपलब्धियों का बालक की समाजीकरण प्रक्रिया पर तुलनात्मक प्रभाव का अध्ययन''* (थीसिस) 1993
6. http://bookmelody.space
7. http://www.shodhganga.in/sliv.net.ac.in

****